भूमिका

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावों को प्रकट करता है। जीवन के विभिन्न पहलुओं को साहित्य के द्वारा दर्शाता है अर्थात् साहित्य में भाषा मानव के सम्पूर्ण व्यक्तिव की अभिव्यक्ति है। जैसे-जैसे युग बदला वैसे-वैसे भाषा भी बदलती रही। किन्तु कुछ भाषाओं के माधुर्य ने कवियों और पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। ब्रजभाषा काव्य इस का जीवन्त उदाहरण है।

जैसा कि हम जानते हैं, हिन्दी साहित्य का इतिहास विशाल और विस्तृत है जिसमें समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है, यह बदलाव उस युग की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप हुआ है। अतः समय-समय पर साहित्य के साथ भाषा में भी बदलाव आना स्वभाविक है जैसे आदिकाल में डिंगल तथा ब्रज भाषा साहित्य की अधिकता थी। भक्ति काल में ब्रजभाषा अपने पूर्ण प्रभाव के साथ आगे बढ़ी। अतः यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है, कि भक्तिकाल ब्रजभाषा के लिए स्वर्णकाल था। यही स्थिति रीतिकाल में भी रही। सम्पूर्ण रीतिकाल का साहित्य सृजन इसी ब्रजभाषा का मुखापेक्षी रहा है। किन्तु आधुनिक युग में ब्रजभाषा की जगह खड़ीबोली ने ले ली। फिर भी ब्रजभाषा का अन्त नही हुआ आधुनिक युग में भी हमें ब्रजभाषा में रचना करनेवाले अनगिनत कवियों का सरस काव्य देखने को मिलता है।

काव्य का विषय काव्य की आत्मा माना जाता है, जिस के द्वारा उस समय

की विशिष्ट प्रवृत्ति की झलक दिखाई देती है। जिस प्रकार आदिकाल में वीर काव्य का आधिक्य रहा, उसी प्रकार भक्तिकाल में काव्य का विषय भक्ति, वंदना, प्रार्थना और विनय से परिपूर्ण रहा, जिस के अन्तर्गत विभिन्न देवी-देवताओं की भक्ति को दर्शाया गया है। रीतिकाल में श्रृंगारिक रचनाओं ने अपनी जगह बना ली। जिसमें ब्रजभाषा का सौन्दर्य पूर्ण रूप से निखर कर सामने आया। किन्तु आधुनिक काल में खड़ीबोली ने काव्य में अपना स्थान बना लिया। काव्य के विषय ने आम आदमी की समस्याओं को उजागर किया, क्योंकि मानव में चेतना के स्वरों को जगाने के लिए काव्य में भी चेतना के स्वरों का आगमन हुआ।

अतः खड़ीबोली ने आधुनिक युग में विषयानुगत बदलाव करते हुए भाषा के प्रवाह को बदल दिया। किन्तु ब्रजभाषा कवियों ने अपनी कलम को रोकने के बजाय युगानुसार मोड़ दिया, अर्थात उन्होंने राधा-कृष्ण की भक्ति तथा श्रृंगार वर्णन को कम करते हुए समाज में हुए बदलाव, समस्याओं को दोहो, छन्द, सवैया, पद, कुण्डलियाँ गजल और पैरोडी आदि के द्वारा प्रस्तुत किया। प्रबंध, मुक्तक रूप से नए विषयों के साथ रचना की। अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक काल के ब्रजभाषा कवियों ने अपने काव्य में मानव जीवन का यथार्थमयीचित्त को प्रस्तुत किया है।

जैसा कि सर्वविदित है ब्रजभाषा का प्रभाव आदिकाल से ही प्रारंभ हो जाता है। और पूर्व मध्यकाल से लेकर उत्तर मध्य काल तक ब्रजभाषा काव्य रचना का प्रस्तार सम्पूर्ण देश में प्रसारित हो जाता है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर बंगाल की खाड़ी तक ब्रजभाषा काव्य का एक छत्र साम्रराज्य स्थापित हो जाता है। यही कारण है कि 18 वीं शताब्दी से लेकर 20 वीं शताब्दी तक सम्पूर्ण गुजरात अंचल भी ब्रजभाषा के इस प्रवाह में समाहित होता रहा है और यही कारण है कि गुजरात के कच्छ, भुज प्रदेश में ब्रजभाषा काव्य पाठशाला का विधिवत् संचालन लगभग 200 वर्षों तक लगातार चलता रहा चूँकि राजस्थान भी ब्रजक्षेत्र के सीमावर्ती प्रदेशों से जुड़ा हुआ है अतः समग्र राजस्थान पर ब्रजभाषा का प्रभुत्व छाया ही रहा है राजस्थान के बहुत सारे ग्राम नगर तो आज भी अपनी ब्रजभाषी परम्परा का निर्वाह

कर रहे है भरतपुर, बयाना, करौली, डींग, कामवन, गंगापुर सिटी, सवाईमाधौपुर, जयपुर और उसके आस-पास के समग्र अंचल में ब्रजभाषा राजस्थानी बोलियों का हाथ पकड़कर चहल कदमी करती रही है। ब्रजक्षेत्र से संलग्नता के कारण ही यहां के अधिकाधिक रचनाकारों ने राष्ट्रीय मुख्यधारा में समाहित होने के लिए ब्रजभाषा में काव्य रचना की परम्परा का निर्वाह किया है।

राजस्थानी परिवेश में ब्रजभाषा साहित्य का इतना अधिक सृजन हुआ और हो रहा है कि राजस्थान सरकार को ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

एक बार महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि डॉ. विष्णु विराट से जब मेरी भेंट हुई और चर्चा के दौरान जब उन्होंने राजस्थान में रचित ब्रजभाषा काव्य की महत्ता पर प्रकाश डाला और उपलब्ध ढ़ेर सारी सामग्री से अवगत कराया तो मुझे आश्चर्य हुआ कि ब्रजभाषा जैसे महत्वपूर्ण साहित्य की चर्चा अधिक विस्तार से क्यों नहीं की गई? जिसका सृजन राजस्थान की वीर भूमि में हुआ था। मैंने डॉ. विष्णु विराट से कुछ पुस्तकें लेकर उनका अध्ययन किया और विषय की महत्ता से मैं अत्यधिक प्रभावित हुई, तभी मैंने तय कर लिया था कि मुझे राजस्थान के ब्रजभाषा काव्य पर ही शोध प्रबन्ध तैयार करना है। इसी सन्दर्भ में एम. ए. करने के बाद डॉ. विष्णु विराट की सलाह पर मैंने डॉ. ओम प्रकाश यादव, वरिष्ठ प्रवक्ता हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के निर्देशन में अपना पंजीकरण पी.एच.डी. उपाधि हेतु करा लिया और धीरे-धीरे अध्ययन मनन करते हुए शोध प्रबन्ध की रचना प्रारम्भ कर दी।

इस शोध प्रबंध के सम्पन्न होने में विशिष्ट योगदान डॉ. विष्णु विराट का रहा है, जिनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। मेरे शोध निर्देशक डॉ. ओम प्रकाश यादव ने भाषा प्रस्तुति, प्रबन्ध संघठन एवम् शोध प्रक्रिया के औचित्य का निर्देशन करते हुए जो मार्ग-दर्शन मुझे प्रदान किया है उसके प्रति मैं उनका आभार प्रकट करती हूँ इसके साथ ही ब्रजभाषा अकादमी के अधिकारियों, साहित्यकारों एवम् उन विद्वानों

का भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से मुझे सहयोग दिया है।

मैं अपने पिता जी श्री विजयकुमार सेन एवम् अपनी माताजी श्रीमती उषादेवी सेन तथा अपनी बहन रंजना, राखी और भाई पूणेन्द्र सेन एवम् अंकल कैप्टन सुखदेव प्रसाद यादव के प्रति अपनी खुशी व्यक्त करती हूँ जिनके आत्मिक सहयोग से मैं यह यज्ञपूर्ण कार्य कर सकी हूँ, अपनी अत्यन्त निकटस्थ सहपाठिनी एवम् सहेली कविता यादव और कमला पाण्डे के प्रति अपनी आत्मिक सद्भावना एवम् कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिन्होंने निरन्तर मेरे साथ रहकर मुझे प्रेरणा एवम् प्रोत्साहन दिया.

शोध प्रबन्ध को अध्ययन की सुविधा के लिए सात अध्यायों में विभक्त किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध के **प्रथम अध्याय** में राजस्थान में ब्रजभाषा काव्य के संक्षिप्त इतिहास की चर्चा की गई है जिसके अन्तर्गत ब्रजभाषा के विभिन्न नाम, आधुनिक सीमाओं में विभिन्न प्रदेश तथा राजाश्रय कवियों द्वारा ब्रजभाषा काव्य के वर्चस्व को दर्शाया गया है साथ ही राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

शोध प्रबन्ध के **द्वितीय अध्याय** में हिन्दी साहित्य के इतिहास में ब्रजभाषा काव्य के आधुनिक युग और ब्रजकाव्य के योगदान को दर्शाया गया है। जिसके अन्तर्गत आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल में ब्रजभाषा के विराटस्वरुप को दर्शाया है साथ ही ब्रजभाषा में रचना करने वाले कवियों के नाम शामिल किये गये जो कालानुरुप बदलते हुए ब्रजभाषा काव्य में अपना स्थान बनाते रहे हैं जैसे आदिकाल में वीरात्मकता, भक्तिकाल में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति, वंदना, प्रार्थना आदि। और रीतिकाल में नायक-नायिका का श्रृंगारिक वर्णन एवं आधुनिक काल में आम आदमी से जुड़ी समस्याओं को अपने काव्य में स्थान दिया। इस प्रकार काव्य की विषयवस्तु की विभिन्नता को दर्शाते हुए विभिन्न दोहे, छन्द, कवित्त, पद और

कुण्डलियों को दर्शाया गया है। साथ ही आधुनिक काल तक आते-आते ब्रजभाषा का क्षरण और खड़ीबोली के फैलते रूप को दर्शाया है किन्तु ब्रजभाषा के क्षरण के बावजूद उस के अस्तित्व को बनाए रखने और ब्रजकाव्य के भण्डार की दिन प्रतिदिन वृद्धि करने वाले कवियों के नामों को भी दर्शाया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के **तीसरे अध्याय** में हिन्दी साहित्य के इतिहास में राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिसके अन्तर्गत ब्रजभाषा के आधुनिक कवियों का विस्तृत रूप से परिचय दिया गया है साथ ही उनकी रचनाओं और विषयों की भिन्नता की चर्चा की गई है। ब्रजभाषा के काव्य सौष्ठव को दर्शाते हुए उनकी काव्य कलाओं को प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबन्ध के **चतुर्थ अध्याय** में राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों के कृतित्व को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है। जिसेक अन्तर्गत विभिन्न दोहे, छन्दों, सवैयो, पदों और कुण्डलियों आदि का समावेश किया गया है और विषय की विभिन्नता कृतित्व की पराकाष्ठा को प्रकट करती हुई ब्रजभाषा के साहित्य कोश की वृद्धि को स्पष्ट करते हुए दिखाया गया है।

शोध प्रबन्ध के **पंचम अध्याय** में राजस्थान के ब्रजभाषा काव्य की परम्परा और प्रयोग को दर्शाया है। जिसके अन्तर्गत राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने परम्परित काव्यों की रचना की। जिसमें भक्तिपरक काव्य, कृष्ण की महिमा, राधा-कृष्ण लीला, ब्रजमहिमा तथा अन्य देवी देवताओं के स्वरूप को स्पष्ट रुप में दर्शाया गया है। साथ ही आधुनिक युग की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं को भी उद्घाटित किया गया है। अर्थात् परम्परा और आधुनिकता को काव्य में स्थान देते हुए युगानुसार अपने काव्य को बदलते हुए नए और पुराने दोनों विषयों को साथ लेकर काव्य की रचना कर रहे कवियों के दोहे, पद, छन्द, सवैया और कुण्डलियों को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत शोध के **छठे अध्याय** में ब्रजमंडल के आधुनिक कवियों के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत आधुनिक कवियों के परिचय कृतित्व को दर्शाते हुए राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों के काव्यों के साथ तुलनात्मक

रुप में दर्शाया गया है जिसके अन्तर्गत आधुनिक ब्रजभाषा कविगण और राजस्थान ब्रजभाषा कविगण परम्परागत और आधुनिक दोनों विषयों पर लिखते हुए साथ-साथ यथासंभव अपना योगदान दे रहे है। और ब्रजभाषा के साहित्य कोश को भी समृद्ध कर रहे है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के **सातवें अध्याय** में आधुनिक राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य की समीक्षा की गईं है। जिसके अन्तर्गत कवियों की प्रगतिशील विचारधारा का परिचय देते हुए महँगाई, सामाजिक चेतना, नारीशिक्षा को उद्घाटित करते हुए, उनके आत्मीय संवेदनाओं को प्रभावी ढ़ंग से संबंधों के लगाव एवं जमीन से जुड़ी हुई, राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण, सामूहिक दुःख दर्दो का प्रदर्शन और राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर कथ्य के प्रसार को उदाहरण देकर समझाया गया है। साथ ही काव्य में छन्द, अलंकार, भाव-योजना और रस की महत्ता को उद्घाटित करते हुए उदाहरण दिए गए हैं।

अंत में मूल्याकंन में ब्रजभाषा की लुप्तता को नकारते हुए आज भी उस की मधुरता, सौंदर्यता और रसिकता को कायम रखने के लिए कवियों ने ब्रजभाषा के वर्चस्व को बनाये रखा है साथ ही उस में राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। परम्परा और आधुनिकता के पुट को काव्य में रचा है। आधुनिक कवियों के साथ-साथ चलते हुए अपने क्षेत्र की भाषा से अलग ब्रजभाषा में काव्य रचना करते हुए ब्रजभाषा को आज भी अपनी प्रतिभा द्वारा भाषा के सिंहासन पर सुदृढ़ किया हुआ है। और आने वाले युगों में भी ब्रजभाषा की मधुरता इसी प्रकार कायम रहेगी। इसी सत्य को प्रतिपादित करना इस शोध प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

शोध-छात्रा

(पूनम सेन)